प्रतिलेखन संख्या 10

सभापति महोदय, आज हमारे देश में जो ऊपर से लेकर नीचे तक शिक्षा दी जा रही है उसमें व्यवस्था ही एक कारण है जिसकी वजह से शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। मेरा अपना विचार है कि जो शिक्षा प्रणाली है और जिस रूप में शिक्षा दी जा रही है, वही अनुशासनहीनता का भी कारण है। अपने देश और प्रदेश में हर एक की अपनी–अपनी भाषा है और वह बालक जो इस देश में पैदा हुआ है, जो अपनी मातृभाषा की गोद में पला है, उसको यदि अपनी मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाए तो मेरा विचार है कि शिक्षा का स्तर ठीक हो सकता है। जो सबसे बडी भूल और कमी सरकार के द्वारा दी जाने वाली शिक्षा के संबंध में हो रही है, वह यह है कि बालक की मातृभाषा में शिक्षा न देकर, उसको उस भाषा में शिक्षा देने की व्यवस्था की गई है जो हमारे देश या प्रदेश की भाषा कभी रही ही नहीं। मेरा अभिप्राय विदेशी भाषा अंग्रेजी से है। मैं यह मानकर चलता हूँ कि जब से यह भाषा इस देश में आई है, चाहे वह किसी कारण से आई हो, इसे आप भी और इस माननीय सदन के सदस्य भी जानते हैं कि उस से बुरे परिणाम ही निकले हैं, कोई भलाई नहीं हुई है। इस देश को जो हानि हुई है वह किसी से छिपी नहीं है। हम देख रहे हैं कि हमारे यहाँ जितना फैशन बढ रहा है और जितनी वेशभूषा बिगड रही है वह सब अंग्रेजी भाषा के ही कारण है।

जिस समय यहाँ पर अंग्रेजों का राज्य था, प्रायः यह देखने को मिलता था कि वे लोग जो विशेषकर

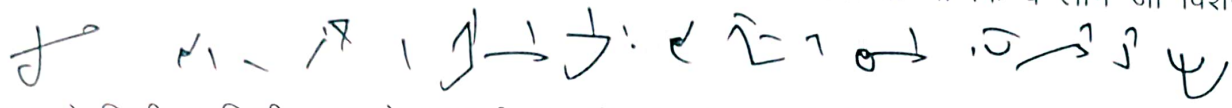

कर के किसी न किसी तरह से सरकारी पक्ष के ही होते थे अंग्रेजों से मिलने के लिए जाते समय

अंग्रेजी वेशभूषा का ही प्रयोग करते थे। परंतु यह इस प्रदेश और इस देश का दुर्भाग्य है कि अंग्रेजों

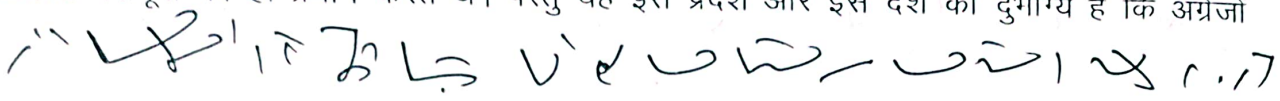

का राज्य समाप्त हो जाने के बाद भी लोग उनकी वेशभूषा को पहनते चले जा रहे हैं। इससे जो

प्रभाव हमारे देश के फैशन पर पड़ा उससे लाभ के बजाय हानि ही हुई है और हो भी रही है।

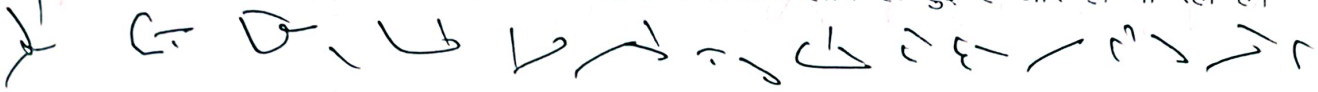

मेरा ऐसा विचार है कि अंग्रेजी वेश–भूषा से इस देश को बहुत हानि हुई है। भारत की गौरवपूर्ण

सभ्यता और संस्कृति के संरक्षण पर पर्याप्त ध्यान देने की आवश्यकता है।